मैक्स वेबर: प्रोटेस्टेंट नैतिकता व पूंजीवाद तथा अन्य अवधारणाएँ

(Max Weber: Protestent Ethics & Capitalism & Other Concepts)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

प्रोटेस्टेंट नैतिकता

- *The Protestant Ethics and The Spirit of Capitalism*, 1905
- वेबर ने धार्मिक कारक को परिवर्तनीय तत्व माना है तथा इसका आर्थिक व अन्य सामाजिक घटनाओं पर पड़ने वाले कार्य–कारण प्रभाव का वेबर ने विश्लेषण व निरूपण करने का प्रयत्न किया है।
- वेबर का मत है कि धर्म मानव समाज में विचार, विश्वास, मूल्य तथा मानवीय क्रियाकलापों (आर्थिक भी) की दिशा को निर्देशित व नियंत्रित करता है।
- अपने सिद्धांत के सहारे वेबर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि आधुनिक पूंजीवाद केवल पश्चिमी देशों में ही सबसे पहले क्यों आया, इसके लिए उन्होंने विभिन्न धर्मों में पाए जाने वाले धार्मिक आचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा उनके आर्थिक व सामाजिक संगठनों से संबंधों का विश्लेषण किया।

वेबर ने विश्व के छः महान धर्मों का अध्ययन किया – कन्फ़्यूशियस, हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम तथा यहूदी

धर्म का समाजशास्त्र

धर्म के समाजशास्त्र के प्रमुख आधार

- धार्मिक तथा आर्थिक क्रियाएँ एक–दूसरे से संबंधित तथा निर्भर रहती हैं। अर्थात् ये दोनों क्रियाएँ एक–दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं।
- कोई भी एकतरफा दृष्टिकोण, पद्धति अथवा व्याख्या अवैज्ञानिक/ गलत है। सामाजिक घटनाएँ तथा धार्मिक आधार दोनों एक–दूसरे के अस्तित्व तथा निरंतरता के लिए उत्तरदायी हैं।
- वेबर धार्मिक कारक को परिवर्तनीय तत्व मानकर उनका आर्थिक व अन्य सामाजिक घटनाओं पर प्रभाव मालूम करने का प्रयत्न करते हैं।
- वेबर ने धर्म के 'आदर्श प्रारूपों' को निर्मित किया तथा उसके आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया।

कालविनवाद का आदर्श प्रारूप

- ईश्वर अनुभवातीत निरपेक्ष होता है, जिसने दुनिया को बनाया है तथा वह इस पर राज्य करता है।
- इस सर्वशक्तिमान व रहस्यपूर्ण ईश्वर ने मनुष्य की सभी आत्माओं का पूर्व निर्धारण ही शाश्वत है तथा इसका कारण जानना मनुष्य की समझ के बाहर है।
- ईश्वर ने अपनी स्वयं की महिमा के लिए संसार का सृजन किया है।
- ईश्वर की इस महिमा के लिए उसने मानव को आदेश दिया है कि पूर्व निर्धारण को जानने की इच्छा के बिना उसे अपने कार्यों को परिश्रम से करना चाहिए।
- संसार की सभी वस्तुएँ, मानव की प्रकृति तथा हाड़–मांस पाप और मौत में लिप्त हैं, जिनसे ईश्वरीय कृपा के बिना कोई भी छुटकारा नहीं पा सकता।

पूंजीवाद

- वेबर द्वारा की गई पूंजीवाद की व्याख्या मार्क्स से अलग नहीं है।
- बाजार में जो आदान–प्रदान होता है, खरीद–फरोख्त होती है, उसमें धन की उपलब्धि करना तथा मुनाफा लेना केंद्रीय लक्ष्य होता है।
- वेबर का तर्क है कि जब किसी पूंजीवादी संगठन की स्थापना होती है, तो उसका एक मात्र उद्देश्य अधिकतम मुनाफा लेना होता है।

'पूंजीवाद एक ऐसी व्यवस्था है, जिसका उद्देश्य मुनाफा प्राप्त करना होता है। यह मुनाफाखोरी बाजार के संबंधों से बंधी होती है।'

– पारसन्स

पूंजीवाद के लक्षण

- धन का संचय
- विवेकीकरण
- संगठित उद्यम
- नौकरशाही
- तकनीकी
- प्रतियोगिता
- वर्ग संबंध

प्रोटेस्टेंट धर्म

- यूरोप में सुधार आंदोलन के काल में 16वीं शताब्दी में इसका जन्म हुआ। मार्टिन लूथर तथा जॉन कैल्विन जैसे विचारकों द्वारा इसका विकास हुआ।
- प्रोटेस्टेंट धर्म को 'विरोध का धर्म' कहते हैं।
- सेंटपॉल, रिचर्ड बेक्स्टर, जॉन बनियन तथा बेंजामिन फ्रैंकलिन प्रमुख रूप से प्रोटेस्टेंट आचार की स्थापना के लिए उत्तरदायी।
- बेंजामिन फ्रैंकलिन ने आधुनिक पूंजीवाद की उन शिक्षाओं व उपदेशों का उल्लेख किया है, जो एक सफल व्यवसायी व पूंजीपति बनने के लिए आवश्यक हैं।
- *'समय ही धन है', 'धन से धन कमाया जाता है', 'एक पैसा बचाना एक पैसा कमाना है', 'ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है', 'जल्दी सोना तथा जल्दी उठना व्यक्ति को स्वस्थ, धनी व बुद्धिमान बनाता है', 'कर्म ही पूजा है', ब्याज व लाभ नैतिक है'*

कैल्विन ने बताया कि ईश्वर ने कुछ लोगों को मोक्ष हेतु चुन लिया है, जिसको जाना नहीं जा सकता तथा मनुष्य को इसे जानना भी नहीं चाहिए, बल्कि उसे यह सिद्ध करना चाहिए कि ईश्वर ने उसे ही चुना है तथा यह जीवन/ व्यवसाय में सफल होकर ही सिद्ध किया जा सकता है।

प्रोटेस्टेंट नैतिकता तथा पूंजीवाद

- वेबर ने प्रोटेस्टेंट धर्म की नैतिकता तथा पूंजीवाद की आत्मा का अध्ययन किया।
- वेबर का मत है कि जहां–जहां प्रोटेस्टेंट धर्म का प्रभाव है, वहाँ–वहाँ पूंजीवाद को बढ़ावा मिला, जैसे – हॉलैंड, ब्रिटेन, अमेरिका आदि।
- कैथोलिक धर्म के प्रभाव वाले देशों में पूँजीपतियों की संख्या कम रहती है।
- वेबर का मानना है कि भारत में पूँजीपतियों के अभाव का प्रमुख कारण हिन्दू धर्म है क्योंकि हिन्दू धर्म में धन की अपेक्षा मोक्ष व परलोक को अधिक मान्यता प्रदान की गई है।
- वेबर के अनुसार प्रोटेस्टेंट धर्म में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो आर्थिक नियमों की व्यवस्था को उत्पन्न करने में सहायक हैं, जिसे पूंजीवाद कहते हैं।

प्रोटेस्टेंट नैतिकता तथा पूंजीवाद

पूंजीवाद के विकास में प्रोटेस्टेंट धर्म के आचारों का प्रभाव

- कर्म ही पूजा है।
- कैल्विनवाद अथवा व्यावसायिक आचार
- ब्याज द्वारा आय को मान्यता
- शराबखोरी पर रोक तथा ईमानदारी को प्रोत्साहन
- कार्य से अवकाश पर रोक

हालांकि ऐसा नहीं है कि वेबर ने मात्र प्रोटेस्टेंट धर्म के आचारों को ही पूंजीवाद के विकास में आवश्यक माना है, अपितु वे अन्य कारकों को भी इसके लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। यही कारण है कि उन्हें बहुकारकवादी समझा जाता है।

अन्य अवधारणाएँ

- **सामाजिक स्तरीकरण:** वर्ग, प्रस्थिति तथा शक्ति (Class, Status and Power)

सामाजिक वर्ग	सामाजिक प्रतिष्ठा	सामाजिक व्यवस्था
यह अवधारणा मुख्यतः आर्थिक आधारों पर आधारित है।	यह अवधारणा सामाजिक प्रस्थिति/ प्रतिष्ठा से जुड़ी है।	यह अवधारणा शक्ति की अवधारणा से प्रारंभ होती है।
आर्थिक	सामाजिक	राजनीतिक

अन्य अवधारणाएँ

- **वर्ग स्थिति (Class Situation)**

व्यक्ति की कार्यशैली व दशाएँ और उसकी समझ एक जैसी नहीं होती, ठीक इसी प्रकार वर्ग स्थिति भी एक समान नहीं होती। जिस प्रकार से कर्ता के भिन्न अर्थ होते हैं, ठीक उसी प्रकार वर्ग की स्थितियाँ भी भिन्न होती हैं।

वर्गों की तीन श्रेणियाँ

- संपत्ति वर्ग (Property Class)
- उपलब्धि वर्ग (Acquisition Class)
- मध्यम वर्ग (Middle Class)

'वर्ग की निश्चित तथा विशिष्ट स्थितियों का निर्णय बाजार ही करते हैं।' – वेबर

अन्य अवधारणाएँ

- **प्रस्थिति समूह (Status Group)**

ऐसे समूह के सभी व्यक्तियों की जीवनशैली प्रायः समान होती है तथा समाज में उन्हें समान सम्मान प्राप्त होता है। उनमें समूह के रूप में एक चेतना–भाव विद्यमान होता है।

- **बाजार स्थिति (Market Conditions)**

बाजार में मुद्रा के बदले वस्तुओं के बदलने के सभी अवसर उपलब्ध होते हैं। एक ओर जहां बाजार, वर्ग की स्थिति का एक भाग है, वहीं दूसरी ओर वर्ग का निर्धारण बाजार के प्रति कर्ता की कार्यशैली व रुझान से निश्चित होता है।

- **जीवन अवसर तथा जीवनशैली (Life Chances & Lifestyle)**

जीवन अवसर वे हैं जिन्हें बाजार निश्चित करता है अर्थात् आर्थिक संरचना निश्चित करती है। दूसरे शब्दों में बाजार स्थिति ही जीवन अवसर व जीवनशैली का निर्धारण करती है।

अन्य अवधारणाएँ

- **मूल्य तटस्थता**

वेबर का मत है कि समाजशास्त्रियों का कर्तव्य है कि वे अपने शोध का संचालन करते समय निष्पक्ष रहने तथा अपने पूर्वाग्रहों को दूर करने का प्रयास करें।

- **कामगारों का मोहभंग**

पूंजीवादी व्यवस्था के कारण कामगारों का अपने काम के प्रति मोहभंग होता है।

- **तर्कसंगति (Rationality)**

वेबर का तर्क है कि आधुनिक समाज तर्कसंगति का समाज है तथा यह तार्किक व विवेकसम्मत सोच–विचार को महत्व देती है।

- **वर्ग हित (Class Interest)**

वर्ग हित का तात्पर्य है कि एक वर्ग परिस्थिति में उस वर्ग के औसत सदस्यों द्वारा अपने हितों की पूर्ति के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों कई एक निश्चित दिशा होती है।

- **व्याख्यात्मक समाजशास्त्र**

Next Class:

टालकाट पारसन्स: सामाजिक क्रिया

(Talcott Parsons : Social Action)